



“(रहमत का भण्डारा - हउ)”

- “आदि गुरए नमह । जुगादि गुरए नमह । सतिगुरए नमह ।
श्री गुरदेवए नमह ।”
- दास दोनों हथ जोड़ के संगत दे चरना विच मत्था
टेकटे होये, आपणे गुनाहां दी माफी लई अरदास बेनती करदा
है संगत दी समर्था है बक्षण दी क्रिपालता करो संगत दे बक्षी
होये नूं गुरु साहब वी बक्षा देंदे हन ।

○ “हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ । हउ विचि जमिआ हउ
 विचि मुआ । हउ विचि दिता हउ विचि लइआ । हउ विचि
 खटिआ हउ विचि गइआ । हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ।
 हउ विचि पाप पुन वीचारु । हउ विचि नरकि खुरगि अवतारु
 । हउ विचि हसै हउ विचि रोवै । हउ विचि भरीऐ हउ विचि
 धोवै । हउ विचि जाती जिनसी खोवै । हउ विचि मूरखु हउ
 विचि सिआणा । मौख मुकति की सार न जाणा । हउ विचि
 माइआ हउ विचि छाइआ । हउमै करि करि जंत उपाइआ ।
 हउमै बूझै ता दरु सूझै । गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ।
 नानक हुकमी लिखीऐ लेखु । जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥1॥
 मठ-२ । कागा चूडि न पिंजरा बसै त अउरि जाहि । जित
 पिंजरे मेरा सहु बसै मासं न तिदू खाहि । फरीदा तन सुका
 पिंजर थीआ तलीआं खूंडहि काग । अजै सुख न बाहुड़िओ
 देख बदे के भाग । कागा करंग ढंडोलिआ सगला मासं । ऐ
 दुई नैना मत छुहओं पिर देखन की आस । हउमै एहा जाति
 है हउमै करम कमाहि । हउमै एई बधना फिरि फिरि जोनी
 पाहि । हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाई । हउमै
 एहो हुकम है पड़े किरति फिराहि । हउमै दीरघु रोगु है दारु
 भी इसु माहि । किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु
 कमाहि । नानक कहै सुणह जनहु इतु संजमि दुख जाहि
 ॥२॥ पउड़ी । सेव कीती संतोखीई जिन्ही सचो सचु

थिआइआ । ओन्ही मदै पैर न रखिओ करि सुकृतु धरमु
कमाइआ । ओन्ही दुनीआ तोडे बंधना अजं पाणी थोड़ा
खाइआ । तूं बखसीसी अगला नित देयहि चड़हि सवाइआ
। वडिआई बडा पाइआ । 7।” (1-466)

○ “देख दुर्टंब लोभि मोहिओ प्राजी माइआ कउ लपटाजा।
माइआ होई नागनी जगति रही लपटाई ।” (1-671-510)

(पाठी माँ साहिबा)



“खेत शरीर जो बीजिए सो अन्त खलोआ आई ।”
गुरु नानक देव पातशाह सचखण्ड तों उस अकाल पुरख
परमात्मा दी ओ पावन जोत ओ पवित्र बाणी जिसनूं इस मृत
लोक विच धुर की बाणी कह करके पुकारेया जादां है । जिस
दे विच संशोधन दी गुंजाइश है ओ धुर नहीं जो धुर दा नहीं
ओ शब्द दा नहीं । जो शब्द नहीं ओ परमात्मा नहीं । ओ
परमात्मा अकाल पुरख “तातृ राम नहिं नर भूपाला भुवनेश्वर
कालेहु का काला ।” संत तुलसी दास दी आपणी पवित्र बाणी
रामचरित मानस दे विच “करौं कहां लगि नाम बड़ाई । राम
न सकहि नाम गुण गाई ।” कहदें ने मेरा राम इस धरती दा
कोई राजा नहीं है “तातृ राम नहि न भूपाला ।” “भुवनेश्वर”

अनंत ब्रह्मण्डां दा स्वामी “कालेहु का काला” ओ ते काल दा
वी काल है जिसनूं तुलसी दास जो काला दा काल कहदें ने
उसनूं गुरु नानक साहब अकाल कहदें ने जो काल तों रहित
है आपणी पवित्र बाणी दे विच क्या उपदेश करदे ने । साथ -
संगत जी सब तों पहला असी इक भ्रम दे विचों निकल जाईये
। गुरु नानक देव पातशाह इस मुल्क दे विच आये होर जितने
वी संत आये ने इस मुल्क दे विच “राम संत महि भेदु किछु
नाही एकु जन कई महि लाख करोरी ।” कहदें ने संत कौण है
जेडा उस राम नूं मिल चुका सत्पुरुष नूं मिल चुका “सतिपुरखु
जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाड । तिस के सगि सिखु
उधरै नानक हरि गुन गाड ।” उसी दी संगत दे विच जीव दा
कल्याण हो सकदा है । किस दी संगत दे विच ! जिसने
सतिपुरख नूं जाण लेआ अकाल दे नाल अभेद हो गया अकाल
नूं जाणन लग गया इस मुल्क दे विच अगर उस अकाल पुरख
परमात्मा नूं मिलण दा शौक रखदे हो ते उसदी बंदगी करो
असी बंदगी किस दी करदे हाँ ! संसार दी काल दी उसी दा
नुमाईदा उसी दा अंश साडे अन्दर जितनियां वी रुहां इस मुल्क
दे विच दूसरे ब्रह्मण्डां दे विच मौजूद ने । साथ - संगत जी
अज तक इसदी गिनती कोई नहीं दे सकया । ऐ ओही जाणदा
है जिसदे कि असी अंश हाँ अपार जन्म हो चुके अपार जूना

ने अपार क्यों कहा गया है 84 लख कहण दी गल है असी ते
इक हजार दी गिनती नहीं दे सकदे । अनंत ब्रह्मण्ड, अनंत
जूना, अनंत जन्म, ऐसी केड़ी ताकत है अनंत जन्मा दे अपार
जन्म दी हर घड़ी दा हिसाब उसदे कोल है “घड़ी चसै का लेखा
दीजै” ऐ हिसाब देणा पैणा है जितनी मर्जी सियाणत कर लईये
इस मुल्क दे विच अगर असी परमात्मा नूं मिलना चाहदें हाँ
सानूं आपणे शौक दा प्रदर्शन करना पयेगा शौक की है ! इक
काम । काम दा भाव है कामना कामना चौढ़ह इनिद्रया दे
अन्दर बंद है गुरु नानक साहब ने आपणे पिछले सत्संगा दे
विच इस सारे प्रकृति दे भेद नूं और परमात्मा दे भेद नूं स्पष्ट
कीता हैं असी परमात्मा - 2 करदे हाँ सानूं पता ही नहीं कि
परमात्मा कौण है । सब तों पहले परमात्मा दा गुण है प्रकृति
अव्यक्त प्रकृति अति सूक्ष्म उसदे बिना ते सृष्टि दी रचना ते हो
ही नहीं सकदी । असी ओनूं जड़ कहदें हाँ बेशक जड़ है ऐ सारे
गुण ही जड़ हन क्यों ! क्योंकि ऐ गुण जिसदे ने इन्हाँ नूं
चलाण वाला ओ है । अगर ओ इन्हाँ नूं चलाणा न चावे हुणे
सारी सृष्टि नूं ब्रेक लगा देगा । दया मेहर संत इस मुल्क विच
की करन आदें ने दया मेहर देण वास्ते । अज दा भण्डारा
“रहमत दा भण्डारा ।” असी जो अर्थ कडे ने लंगर दे मुतलक
खाण पीण दे मुतलक क्योंकि भण्डारे दा सानूं इको ही अर्थ

मिलदा है खाणे पीणे दा शौक जिन्हां मत और धर्मा दे नाल
असी सम्बन्ध रखदे हां । साथ - संगत जी अधूरी बाणी अधूरा
प्रचार सिर्फ अनुयायिआं नूं बनाणां गिनती गिननी कितनेयां नूं
नाम दे दिता, कितनेयां नूं अमृत छका दिता कितने बन्दे इकट्ठे
हो जादें ने । बड़े महान सत्संग कीते जादें ने कितनियां रुहां
दा कल्याण हो गया ! इसदी गिनती - अंगुलियां दे पौटे बहुत
ज्यादा ने इक इन्सान दे दूसरे इन्सान दी जरुरत ही नहीं हैंगी
। कितने शर्म दा विषय है कि असी उस परमात्मा दी ताकत
जिसनूं नाम केहा जांदा है शब्द केहा जादा है जो इस आत्मा
दा कल्याण कर सकदी है क्या इसनूं प्यार केहा गया है ।

“रहमत दा भण्डारा” रहमत और भण्डारा । “एका माई जुणति
विआई तिनि चेले परबाणु । इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए
दीबाणु । जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै पुरमाणु ।
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ।” गुरु नानक
साहब आपणी बाणी दे विच इस चीज नूं स्पष्ट करदे ने ।
दीबाणु लफज दा वी ऐदे विच नेम कीता है भण्डारी लफज दा
वी नेम कीता है । भण्डारी दा भाव की है चलाण वाला कोई
ऐसी वस्तु कोई ऐसा पदार्थ, कोई ऐसा सम्बन्ध जिसनूं ओ
कायम रखे ओ की है भण्डारी ! परमात्मा दा इक गुण है असी
ओदा इको ही अर्थ कड़या है खाण पीण दा प्रबन्ध बस इस तों

अगे असी गये ही नहीं । साथ - संगत जी पौढ़ियां चढ़ागें ते
छत दा पता चलेगा कि छत की है पौढ़ियां ते बैठे - 2 थोड़ी
पता चल जायेगा ! होका देई जादें हन । संत आदें ने हक दा
नारा देंदे हन । हक की है सतिनामु । याद करादें ने इस सृष्टि
नूं चलाण वाली कोई ताकत है ओ हक है सतिनामु है । याद
करा देंदे ने होका दे करके चले गये हुण जो हक दे पिछे
चलेगा ओ छत ते पहुंच जायेगा । “लख चौरासीह जौन सबाई
माणस कउ प्रभ दीई वडिआई । इस पउड़ी तै जो नरु चूकै
आई-जाई दुखु पाईदा ।” अपार जन्म साडे हो चुके ने अपार
जन्म । कोई गिनती नहीं कोई पहला जन्म लै करके नहीं बैठे
। कोई पहली वारी संता दे नेड़े नहीं लगे असी, पहली वारी कोई
नाम नहीं लेआ अमृत नहीं छकया असी, कट्ठी संता ने इक वी
मिसाल दिती है अज तक भाई तेनूं पिछले जन्म विच असी
तेनूं नाम दे दिता सी अमृत पिला दिता सी असी हुण कोई
जरुरत नहीं है संत नकट सौदा देण वास्ते इस मुल्क दे विच
आदे ने जो उधार दी गल करदा है आपणे आप नूं संत कहलांदा
है संतमत दे ऊपर दाग है ओ संत नहीं है अगले जन्म किस ने
देखे ने ! कौण गारन्टी देगा कि अगला मनुख जन्म सानूं
मिलेगा । ले आओ किसी संत नूं साडे पास जेडे कहदें ने
अगला जन्म असी इसनूं इन्सान दा दे दागे क्यों ! अगर ओ

पूर्ण संत है ते परमात्मा दे हुकम विच है । परमात्मा दे हुकम
दे नाल उस ताकत दे नाल, शब्द दे नाल उसदी वडिआई है
और ऐ शब्द अज चाहे संत कोलो, चाहे साडे कोलो, चाहे इक
कुते बिल्ले कोलों निकृष्ट जून दे विचों अगर ऐ शब्द निकल
गया । साथ - संगत जी मिट्टी दी ढेर है पंज तूतक शरीर है
किसी दा दो तूतक है किसी दा इक तूतक इस तों अगे कुछ
वी नहीं हैगा ते फिर वडिआई किस दी है नाम दी शब्द दी
भण्डारी दा ऐथें भाव है संकलन । अपार संकलन भण्डार और
भण्डारी, जिसदे कोल ऐ अपार भण्डार है ओ भण्डारी है ।
रहमत, रहमत दा भाव है दया । हुण दया चाहिदी है सब नूं
चाहिदी है दया दे बिना सृष्टि नहीं चलदी । इक दिन सूरज न
चढ़े सृष्टि फना हो जायेगी । जो कलोरोफिल बणदा है न
खाण दा तत्व, ऐ सिर्फ सूरज दी किरनां विच है होर किसे विच
है ही नहीं । चंद सूरज नूं आधार देण वाला कौण है ! कोई
ताकत कम कर रही है अज तक असी कदी ओदे विच फेर
बदल असी महसूस कीता है अज तक नहीं कीता । जितनी
सृष्टि चल रही है कदी आपस दे विच टकराई है सब आपणे
समय सिर चल रहे ने जितनियां घड़ियां साड़ियां लिखियां ने
साथ - संगत जी, सरदार बहादुर जी आपणे सत्संग दे विच
क्या बचन करदे ने स्वास और कोर जेझे ने गिनती दे विच ने

ऐ गिनती खत्म होण तों पहले जन्म होंदेयां ही गिनती शुरू हो
जांदी है जिस तरह बच्चे अंताक्षरी खेलदे ने ना (छोटे-2 खेलदे
ने असी वड्डे वी कई वारी खेडदे हाँ गाणेयां दीआं तुकां मिलादें
हा) ऐ सारी हस्ती किथे मिटा रहे हाँ ! केड़ा प्रदर्शन कर रहे हाँ
इस मुल्क दे विच सोचो ! विचार करो, परमात्मा नूँ मिलण दा
इको ही साधन है इन्सान दी जून । कोई होर जून माई का
लाल चाह करके देवी - देवता “इस देही कउ सिमरहि देव ।
सो देही भजु हरि की सेव । भजहु गोविंद भूलि मत जाहु ।
मानस जन्म का ऐही लाहु । रहाउ ॥ कई जन्म भए कीट
पतंगा । कई जन्म गज मीन कुरंगा । कई जन्म पंखी सरप
होइओ । कई जन्म हैवर ब्रिख जोइओ । मिल जगदीस मिलन
की बरीआ । चिरंकाल इह देहि संजरीआ । रहाउ ॥” कितने
देर दे बाद, अपार समय दे बाद इक सुहानी घड़ी आई है
क्षणभंगुर जीवन है ऐ मत सोचो कि सौ साल दी जिन्दगी बहुत
वड्डी लम्बाई है । वड्डी लम्बाई है 84 लख जून दी किसी संत -
महात्मा ने चाहे ओ अपूर्ण है चाहे पूर्ण है अज तक 84 लख
जामेयां दे समय दा जवाब नहीं दिता इक कल्पना वी नहीं दे
सकया कोई किसी कोल नहीं है हिसाब और इस मुल्क दे विच
असी उन्हाँ नूँ परमात्मा कह कर के धूप बती धुखाई फिरदे हाँ
। ते शब्द गुरु जी कहदें ने आपणे शौक दा प्रदर्शन कर गिनती
गिननी चालू हो गई जिस वेले तूँ इस मुल्क दे विच जन्म लेआ

घੋਰ ਨਰਕ ਦੇ ਵਿਚੋਂ ਆਯਾ “ਨਿਮਾਨੇ ਕਤ ਜੋ ਦੇਤੀ ਮਾਨ ਸਗਲ
ਭੂਖੈ ਕਤ ਕਰਤਾ ਦਾਨ । ਗਰਭ ਘੋਰ ਮਹਿ ਰਾਖਨਹਾਰ ਤਿਥ ਠਾਕੁਰ
ਕਤ ਸਦਾ ਨਮਸ਼ਕਾਰ ।” ਕਹਦੇਂ ਨੇ ਉਸ ਠਾਕੁਰ ਨੂੰ ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ
ਉਸਦੇ ਅਗੇ ਸਦਾ ਹੀ ਜਤਮਸ਼ਕ ਰਹੋ । ਤੇ ਸਾਡਾ ਮਸ਼ਕ ਕਿਸ ਦੇ
ਅਗੇ ਝੁਕਧਾ ਹੈ ! ਵਿਚਾਰ ਕਰੋ, ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਇਸ
ਆਤਮਿਕ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਨੂੰ ਵਿਕਤ ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ ਰੋਣ - ਪਿਟਣ ਨਾਲ ਕੁਛ
ਨਹੀਂ ਹੋਯੇਗਾ ਅਹੰਕਾਰ ਦੇ ਵਿਚ ਗੋਤੇ ਲਗਾਣ ਦੇ ਨਾਲ ਕੁਛ ਨਹੀਂ
ਹੋਯੇਗਾ । ਕਹ ਦੇਣ ਦੇ ਨਾਲ ਕੁਛ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੋਯੇਗਾ ਜੇ ਅਗਰ ਕੋਈ
ਕਹ ਦੇਗਾ ਅਥੀ ਲੈ ਜਾਵਾਂਗੇ ਝੂਠੇ ਹੈ ਮਰਨ ਦੇ ਬਾਦ ਦਾ ਮਜਮੂਨ ਤਨਹਾਂ
ਨੂੰ ਕਹੋ ਅਗਰ ਸਾਨੂੰ ਲੈ ਜਾਣਾਂ ਚਾਹਦੇਂ ਹੋ ਜੀਂਦੇਂ ਜੀ ਲੈ ਜਾਓ ਇਕ
ਝਲਕ ਹੀ ਦਿਖਾ ਦੋ । ਪਿਠ ਹੀ ਦੇਖਿਆਂਕਿ ਅਥੀ ਹੁਕਮ ਨਹੀਂ
ਮਨਦੇਂ ਪਲ - ਪਲ ਆਪਣੀ ਹਸਤੀ ਕਿਸ ਦੇ ਤੇ ਮਿਟਾ ਰਹੇ ਹਾਂ ! ਸੋਚੋ
! ਏ ਪ੍ਰਾਣ ਸ਼ਤਕਿ ਖਤਮ ਹੋਂਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਅਥੀ ਘੁੰਘਰੁ ਪਾ ਕੇ ਨਚਣ
ਤੋਂ ਹੀ ਫੁਰ੍ਖਤ ਨਹੀਂ ਪਾ ਸਕੇ । ਏ ਮਜਮੂਨ ਅਥੀ ਅਪਨਾ ਰਖਿਆ ਹੈ
ਮਿਲਨ ਦਾ ਇਕੋ ਹੀ ਸਾਧਨ ਹੈ ਏ ਜੀਵਨ ਸਾਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਹੈ ਪਰਮਾਤਮਾ
ਨੂੰ ਮਿਲਨ ਦੇ ਸ਼ੌਕ ਦਾ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕਰ ਲੋ ਕਿਸ ਤਰਹ ਪਹੁੰਚਿਆ ਜਾਏ
ਆਪਣੇ ਘਰ ! ਦਿਆ ਮੇਹਰ ਨਾਲ । ਪ੍ਰਾਣੀ ਦੇ ਵਿਚ ਜੀ ਤਾਕਤ ਦਿਤੀ
ਗਈ ਹੈ ਜਦੋਂ ਦੀ ਏ ਆਪਣੇ ਘਰੋਂ ਉਤਰ ਕਰਕੇ ਆਈ ਹੈ । ਸਥਿਤ
ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਬ ਸ਼ਪਣਾ ਕਰ ਰਹੇ ਨੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਰੁਹਾਂ ਇਸ
subject ਤੋਂ ਬਿਲਕੁਲ ਹੀ ਅੰਜਾਨ ਨੇ ਮੂਲ ਜੱਡ ਤੋਂ ਪਤਾ ਹੀ ਨਹੀਂ

इन्सान दा जन्म किस वास्ते होईया है । खाणा - पीणा भोगणा और सो जाणा बस इस तों अगे कुछ नहीं जाणदे । “ऐ जन्म मिठा अगला किस डिठा ।” लोगा दे जेबे कट जा रहे ने गले छोटे कीते जा रहे ने छोटे - 2 बच्चेरा दा हक मार दिता जादा है । सतिया दे नाल निरंतर बलात्कार कीता जादा है विधवा दे नाल निरंतर बलात्कार कीता जादा है । बलात्कार दा भाव है आत्मा जिस कम नूँ करना नहीं चाहिंदीं उस कम नूँ करन वास्ते उस आत्मा नूँ मजबूर कर देणा । इक जिदें दिल नूँ धड़काणा, पैर दे नाल कुचल देणा । कुरान शरीफ क्या कहदीं है इक हजार काबा दे हज दा फल इक पासे रख दो अगर इक धड़कादे दिल नूँ रोंद दिता दुखा दिता ओ सारा फल फना हो जायेगा । ऐसे फना ते असी साथ - संगत जी रोज ही कई कर देंदे हां और कोई माई का लाल इक हजार काबा दे हज कौण कर सकया है ! विचार करो गुरु नानक साहब ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिता है । आपणे आप नूँ असी इस बाणी दे नाल रखणा है बिल्कुल बराबर जिस तरह one way ट्रैफिक चलदा है बिल्कुल बराबर चलना है कोई निन्दया नहीं कोई वडिआई नहीं कोई मत या धर्म चलाण वास्ते ऐथे संत नहीं आदें । ओ होका देके चले जादें ने असी उन्हां दे कपड़े ही खिंचदे रहदें, चक्कर ही कटदे रहदें हां, नकां ही रगड़दे रहदें हां बस होका

दे के चले जादें ने जेडे उन्हां दे पिछे चलदे ने ओ सचमुच
उन्हां दे पिछे घर पहुंच जादें ने । जेडे उन्हां दे पिछे नहीं चलदे
ओ भुले ही रहदें ने इस मुल्क दे विच उन्हां नूं फिर रस्ता नहीं
मिलदा । न कोई रस्ता देंदा है न रस्ता मिल सकदा है 30
मनकेयां दी माला गुरु नानक साहब ने पिछले सत्संग दे विच
खत्म कीती सी ते 31 वां मनका शुरू है ओ की है काम ।
कामना । इस नूं उतारे बिना ऐ मनका नहीं टूटेगा । कामना
सानूं संसार दी है कामना सानूं ताड़ियां मारन दी है “खेत शरीर
जो बीजिए सौ अंत खलोआ आई ।” खेत दे विच जाण तों
पहले तेनूं छूट है जो मर्जी बीज लै पर घर तेरे ओही आयेगा
जो बीज के आया सी । मत जाणी अक - धतूरे बीजण दे बाद
तेरे घर अम कट के आ जाणगें हां पहले तेनूं पूरी छूट है जिस
वेले तूं जन्म लेआ है ना इस मुल्क दे विच तेनूं पूरी छूट है ।
जो चाहे तूं बीज लै ताड़ियां बीज लै या उस परमात्मा दी बंदगी
कर लै शौक नूं पैदा कर लै जीदें जी मर लै जीवत मरिअे
भवजल तरिअे अगर संसार नूं पार करना चाहदें हो इस संसार
दे विचों निकलना चाहदें हो, इस कब्र दे विचों निकलना चाहदें
हो त्याग करना पयेगा यानि यज्ञ । ब्रह्म यानि तपस्या निरंतर
यज्ञ करन वाला ब्रह्मी जीव उस अकाल पुरख परमात्मा नूं
मिलण दे काबिल अवश्य बणदा है । “सिर दीजै काणि न

“**ਕੀਝੈ**” ਸਿਰ ਦੇਣ ਦੇ ਬਾਦ ਵੀ ਤੁਂ ਦਾਵਾ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ । ਕੋਈ
ਦਾਵਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ਤੇਰਾ ਮਤ ਕਿਸੀ ਅਹੰਕਾਰ ਵਿਚ ਰਹੀ ਕਿ ਮੈਂ ਬੜਾ
ਭਜਨ ਕੀਤਾ ਹੈ । ਮੈਂ ਬੜੀ ਤਪਸ਼ਾ ਕੀਤੀ ਹੈ ਘਰ ਬਾਹਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ
ਬਚ੍ਚੇ ਸਥਾਨ ਕੁਛ ਤ्यਾਗ ਦਿਤਾ ਹੈ ਪਰਮਾਤਮਾ ਮਿਲ ਜਾਵੇਗਾ ਨਹੀਂ
ਮਿਲੇਗਾ । ਅਪਾਰ ਯੁਗ ਤਪ ਕਰਨ ਦੇ ਬਾਦ ਅਜ ਬ੍ਰਹਮ ਜੀ ਢ੍ਯੂਟੀ ਦੇ
ਰਹੇ ਨੇ ਤਿਨਾਂ ਮੁਲਕਾਂ ਦੀ 70 ਯੁਗ ਇਕ, 63 ਯੁਗ ਇਕ । ਯੁਗ ਜੁ ਬਾਨ
ਤੌਂ ਕਹ ਦੇਣਾਂ ਆਸਾਨ ਹੈ ਘਟਾ - ਦੋ ਘਟੇ ਜਾਰੀ ਇਕ ਪਾਸੇ ਬੈਠ
ਕਰਕੇ ਤੇ ਦਿਖਾ ਦੇਓ ! ਵਿਚਾਰ ਕਰੋ ਔਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਇਸ ਦੇ
ਨਾਲ ਰਖੋ ਕੌਣ ਕਹਦਾਂ ਹੈ ਅਥੀ ਲੈ ਜਾਵਾਂਗੇ ਪਾਰ । ਕੌਣ ਲੈ
ਜਾਵੇਗਾ ਪਾਰ ਕੌਣ ਕਹਦਾਂ ਹੈ ਅਥੀ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਿਲ ਜਾਵਾਂਗੇ ਮਰਨ ਦੇ
ਬਾਦ ਕੋਈ ਗਾਰਨਟੀ ਨਹੀਂ ਇਕ ਝੂਠ ਹੋਰ ਜਿਥੇ ਇਤਨੇ ਸਾਰੇ ਝੂਠ ਨੇ ।
ਜੀਦੇਂ ਜੀ ਦਾ ਮਜਮੂਨ ਹੈ ਏ ਤਾਰੇ ਇਸ ਤਰਹ ਨਹੀਂ ਫਟ ਜਾਂਦੇ । ਇਸ
ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾਂ । ਖੇਤ ਦੇ ਵਿਚ ਜੋ
ਬੀਜੇਧਾ ਹੈ ਨਾ ਖੇਤ ਹੈ ਇਨਸਾਨ ਦਾ ਜਨਮ ਔਰ ਏ ਪ੍ਰਾਣ ਸ਼ਕਤਿ ਤੁਂ
ਕੇਂਦੇ ਤਤੇ ਖਰੰਗ ਕੀਤੀ ਹੈ ਏ ਤੇਰੇ ਬੀਜ ਹਨ । ਗੁਰੂ ਅਰਜੁਨ ਦੇਵ ਪਾਤਸ਼ਾਹ
ਕੀ ਕਹਦੇਂ ਨੇ “ਇਕ ਨਾਮ ਬੋਵੋ” ਤੇਰੇ ਘਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਤਾਂਹੀ ਹੋਵੇਗਾ ਜੇ
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦਾ ਸ਼ੌਕ ਰਖਿਆ ਹੈ ਜੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਬੀਜ ਕਰ ਕੇ ਆਯਾ ਹੈ ।
ਸੱਥਾਰ ਦੀ ਕਾਮਨਾ ਬੀਜੀ ਹੈ ਤੇ ਸੱਥਾਰ ਦੀ ਕਾਮਨਾ ਕਟ ਕਰਕੇ
ਆਵੇਗੀ ਤੇਰੇ ਘਰ, ਤੇ ਏਦਾ ਭੁਗਤਾਨ ਕਿਵੇਂ ਦੇਗਾਂ ! ਓਦਾ ਭੌਗ ਕਿਵੇਂ
ਕਰੇਗਾ ! ਤਨ ਔਰ ਹੋਮੈ ਦਾ ਪਿੰਜਰਾ ਜਦਤਕਣ ਏ ਆਤਮਾ 31

ਮਨਕੇਧਾਂ ਦੀ ਮਾਲਾ ਪਹਨ ਕਰਕੇ ਬੈਠੀ ਹੈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸ਼ੌਕ ਰਖਦੀ ਹੈ
ਜਿਤਨੇ ਮਰ੍ਜ਼ੀ ਮਤ ਔਰ ਧਰਮ ਹਾਸਿਲ ਕਰ ਲੋ ਜਿਤਨਿਆਂ ਮਰ੍ਜ਼ੀ
ਅਥੀ ਸਿਧਾਣਤਾਂ ਕਰ ਲਈਧੇ । ਜਿਤਨੇ ਮਰ੍ਜ਼ੀ ਨਾਮ ਔਰ ਅਮ੃ਤ ਦੇ
ਕੁਣਡ ਖਾਲੀ ਕਰ ਲਈਧੇ ਸਾਥ - ਸੱਗਤ ਜੀ ਇਚਾਂ ਦੀ ਗਲ ਕਰਨੀ
ਹੈ ਕੋਈ ਹਿਲ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ ਆਪਣੀ ਜਗਹ ਤੋਂ ਅਥੀ ਏਥੇ ਜਕੜੇ
ਹੋਧੇ ਹਾਂ ਇਸ ਜਾਲ ਦੇ ਵਿਚ ਇਸ ਜਾਲ ਦਾ ਕਿਸੀ ਨੂੰ ਕਲਘਨਾ ਤਕ
ਨਹੀਂ ਪਤਾ ਤਕ ਨਹੀਂ ਹੈਗਾ ਅਥੀ ਨਿਰੰਤਰ ਜੋ ਕੁਛ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ ਸੋਚ
ਰਹੇ ਹਾਂ ਸ਼ਾਯਦ ਜਾਲ ਵਿਚੋਂ ਨਿਕਲ ਰਹੇ ਹਾਂ । ਨਿਰੰਤਰ ਇਸ ਜਾਲ ਦੇ
ਅੰਦਰ ਕਸਦੇ ਚਲੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਾਂ ਕਿਥੋਂ ! ਕਿਥੋਂਕਿ ਸਾਡੀ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਦੇ
ਪਿਛੇ ਕਾਮ ਹੈ ਕਾਮਨਾ ਹੈ । ਅਗਰ ਸਤਿਗੁਰ ਦੇ ਪਾਸ ਵੀ ਆਦੇਂ ਹਾਂ
ਕਾਮ ਲੈ ਕਰਕੇ ਹੀ ਆਦੇਂ ਹਾਂ, ਕਾਮ ਲੈ ਕਰਕੇ ਹੀ ਜਾਦੇਂ ਹਾਂ ।
ਪ੍ਰਤਿਫਲ ਅਵਸ਼ਿਥ ਹੈ ਤੇ ਸ਼ਬਦ ਗੁਰੂ ਜੀ ਬਿਲਕੁਲ ਸ਼ਪਣ ਕਰਦੇ ਨੇ
ਪ੍ਰਾਣ ਸ਼ਕਤਿ ਖਤਮ ਹੋਣ ਤੋਂ ਪਹਲੇ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਮਿਲ ਲੈ । ਬੜੀ -
2 ਚਾਲਾਕ ਰੁਹਾਂ ਸਤਸਾਂਗ ਦੇ ਵਿਚ ਆਂਦਿਧਾ ਨੇ ਸਵਾਲ ਕਰਦੇ ਨੇ
ਕਹਦੇਂ ਨੇ ਦੋ ਢਾਈ ਘਟੇ ਦੇ ਭਜਨ ਬਾਕੀ ਮੁਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਹੀ ਗਲ ਰਹ
ਗਈ ਸਰਦਾਰ ਬਹਾਦੁਰ ਜੀ ਦੇ ਖਾਮੀਸ਼ ਰਹੇ । ਕਹਦੇਂ ਨੇ ਭਜਨ, ਭਜਨ,
ਭਜਨ, ਔਰ ਸਿਰਫ ਭਜਨ । ਜਿਨਦਗੀ ਭਰ ਕਾ ਕਾਮ ਹੈ ਕੋਈ ਦਾਵਾ
ਨਹੀਂ ਹੈ । ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਨੂੰ ਕਹਦੇਂ ਨੇ ਸਾਡੇ ਸਤਿਗੁਰ ਨੇ ਕੇਡੇ
ਅਹੰਕਾਰ ਦੇ ਵਿਚ ਹੋ ਜਦੋਂ ਸਾਡੇ ਕਹ ਦਿਤਾ ਤੇ ਹੋਮੈ ਆ ਗਈ । ਸਾਂਤ
ਕਿਸੇ ਦੇ ਨਹੀਂ ਇਸ ਸੂਛਿ ਦੇ ਵਿਚ ਓ ਦਿਆ ਦੀ ਮੇਹਰ ਲੈਕਰ ਕੇ ਆਂਦੇ

ने ओ भण्डार लै करके आदें ने, किस तरीके दे नाल ! बिना
दया दे ऐ आत्मा जेड़ी है आपणे घर नहीं जा सकदी इसदे
कोल जितनी ताकत है उस दी मिसाल गुरु नानक साहब ने
दिती है इक तुलना दे रूप दे विच कि बारह सूरज दी । ओनूं
चाहे बारह पेट्रोल दे टैंक कह लो कोई वी उदाहरण दे दो इक
समझाण दी गल है क्योंकि ऐ चीजां जितनियां वी ने रुहानियत
असी लफजां दे नाल उसनूं बयान नहीं कर सकदे । लाबयान
ने क्योंकि ऐ आत्मा दा विषय है “सबदु गुरु सुरति धुन चैला”
शब्द ! शब्द कौण है परमात्मा और शर्मिंदा शिष्य कौण है कोई
मनुख नहीं, कोई कुते बिल्ले दी गल नहीं करदे आत्मा दी गल
करदे ने बस । गुरु और शिष्य दे विच दा जो मजमून है ओ
है अकाल पुरख दी आत्मिक प्रेरणा । ओ दर्ज है गुरु ग्रन्थ
साहब दे विच । जो भ्रम सी कि ऐ गुरु नानक साहब दी बाणी
है नहीं । झूठ है बाणी अकाल पुरख परमात्मा दी आत्मिक
प्रेरणा है जिस घट दे अन्दर ओ प्रगट हो गई ओ इक नुमाईदा
मात्र इस ताकत नूं प्रगट करेगा बस और ताकत है शब्द । शब्द
है मन, बुद्धि और इन्द्रियां तों परे और इस शरीर दे विच न
मिलदा है न कोई दे सकदा है शरीर दा भाव है मन, बुद्धि
इन्द्रियां जदों असी शरीर दे विचों निकलागें ताहीं जा करके
उस शब्द दे नाल जुड़ागें बाकी शब्द इस शरीर दे विच है “जो

ब्रह्माण्डे सोई पिंडे ।” जो वी इस ब्रह्मण्ड दे विच है ओदा परछावां अण्ड दे विच यानि त्रिलोकी दे विच है और त्रिलोकी दा परछावां जेड़ा है इस शरीर दे विच यानि के परछाई ही परछाई है जिस तरह सूरज दी परछाई पाणी दे विच है और पाणी दा परछावां सानू दीवार ते नजर आ रेहा है पर सूरज ओथे नहीं हैगा सूरज आपणे मण्डल दे विच है । ठीक उसे तरीके दे नाल शब्द आपणी जगह ते मौजूद है आपणां कम करदा है इक परमात्मा प्रकृति है दूसरा परमात्मा शब्द है दोनों मिल करके ऐ नाना प्रकार बणादें ने तीसरा परमात्मा इस जगत दे विच value है पवन जो इस पुतले नूं चलादीं हां अगर पवन ओदे विच प्रवेश नहीं करदी ते ओ जड़ ही केहा जादा है और पवन दे प्रवेश दे बाद वी सम्पदन ते शुरू हो जांदी है, पर असी उस तों कम नहीं लै सकदे । तिन परमात्मा दे प्रगट होण दे बाद वी इस सृष्टि दा कम नहीं चलदा फिर सृष्टि दे वास्ते चौथा परमात्मा होर चाहिदा है । आत्मा ! इसनूं परमात्मा क्यों केहा गया है इसदे विच वी ओ सारे गुण ने जिस दा कि ऐ अंश है । समुंद्र दी बूंद दोनां नूं लैबोरेट्री दे विच टेस्ट test कर लो लिस्ट इको ही बणेगी सिर्फ मात्रा दी कमी रहेगी । समुंद्र दे विच जेड़ी मात्रा आयेगी ओ भरमार आयेगी और बूंद दे विच जेड़ी मात्रा आयेगी ओ सीमित आयेगी । उसदी quantity

निश्चित होयेगी । ठीक उसे तरीके दे नाल ऐ अंश परमात्मा दाते ऐ जगत दा जितना वी कार - व्यवहार चल रेहा है ऐ आत्मा चला रही है । आत्मा जदों वी प्रवेश करदी है ओ पुतला चलण लग पैंदा है ऐ आत्मा निकल जांदी है साथ - संगत जी शरीर दा कुछ वी नहीं होयेगा । पवन रहणीं चाहिदी पुतला उसे तरह कम करेगा जेडी योगी इस शरीर तों जीवित, (जीदें जी) मरदेने ओ ऐ ही भेद है ऐ सुषुम्बा नाड़ी दे अन्दरों ऐ आत्मा निकल जांदी है क्या सुषुम्बा नाड़ी दे अन्दरों निकल जाणा ! क्या कोई तमाशा है ! क्या दो - ढाई घटे दा मजमून है ! ओ वी लोगां दे गले कट कर के निरंतर काम नूं बीज कर के पूर्ण सतिगुरां दे इतिहासां नूं पढ़ लो बिल्कुल स्पष्ट बाणी है । जैसा बीजोंगे वैसा कटोगे । दाढ़ू साहब दा उदाहरण सतिगुरु दे रहे ने पूर्ण संत सी । किसी नूं कोई शक है जोगा जी, जग्गा जी इन्हां दे शिष्य सी सिध योगी जुबान तों जो निकल गया पूरा हो जादां सी जो कह दिता पूर्ण हो गया उन्हां दे इक गुरु भरा चौखा जी उन्हां दी पन्नी सी सती, उन्हां दे औलाद कोई नहीं सी बड़े प्रेमी सी बड़ी सेवा करदे सी गुरु घर दी जदों वी जाणा बहुत सेवा करनी दिल पसीज गया होमै दी लहर आ गई वरदान दे दिता पुत्र दा । होमै ने कम कर दिता कि जो मुंहो निकलदा है पूरा हो जादां है पुत्र दा वरदान दे दिता बड़ी सेवा होंदी सी साथ -

संगत जी ओदा नतीजा की निकलया । गुरु पूरा ही सी गुरु दे
नाल ही लगे होये सन सिद्ध योगी सी बड़ी कमाई वाले बहुत
कमाई वाले नतीजा जाणदे हो की निकलया उन्हाँ नूँ चोला
छडणा ऐआ उसी वक्त । उसी वक्त दा भाव है कि थोड़े समय
बाद और उस घोर नरक दे विच आणा ऐआ गर्भ जून दे विच
। घोर नरक है गुरु नानक साहब आपणे शुरू दे सत्संगा विच
व्यक्त कर चुके ने कैसा भयानक नरक है लाबयान इक लोहे
दी पिण्ड दे विच जिस तरह इक आत्मा नूँ तपाया जाये ना या
किसी होर छोटे जीव नूँ भुनया जादा है, तपाया जादा है ऐ
1600 हड्डियाँ दे जोड़ उस तरह तपा कर पकाये जादे ने आत्मा
थले ही नहीं जे उतरदी । तीसरे तिल ते बैठी आत्मा निरंतर
ओदा चिंतन करदी है और उसनूँ ध्यान दिता जादा है । इस नूँ
याद कराये जादे ने इसनूँ इसदे अपार जन्म कि तूँ की कुछ
कीता है ते इको ही नक रगड़दा है इस घोर नरक विचो कड
मैनूँ सिधा (सीधा) कर मैं तेनू ही याद करांगा इको ही कसम
खादा है पर थले उतर के नहीं आदा बड़ा रोंदा पिटदा है ऐ चार
महीने दा समय ऐसा भयानक नरक है बिल्कुल लाबयान है ।
उस तों बाद जन्म दा दर्द साथ - संगत जी इसनूँ अज तक
किसी ऋषि मुनि ने बयान नहीं कीता कोई लफज ही नहीं ने
। (औलाद) पुत्र - धीया उन्हाँ वास्ते वी गुरु साहब बचन कर

रहे ने मां - बाप नूं निरंतर कुचलदे ने पर जदों मर जादे ने
बड़ियां ढाहां मार करके दुनिया नूं दिखादें ने बड़ियां कैसे
शोक दा प्रदर्शन है कैसी औलाद है किस तरीके दे नाल साडा
कल्याण हो सकदा, साडा समय बीत गया निरंतर बीत दा जा
रेहा है । ते सरदार बहादुर जी क्या बयान करदे ने कि तुसी
निरंतर उस अकाल पुरख परमात्मा दा चिंतन करना है और
सारी जिन्दगी दा कम है ते दावा तुसी कोई नहीं करोगे । इक
बीबी बोल पई कहदीं बाबा लै जाऊँगी । सरदार बहादुर जी ते
बड़ा ऐतराज कीता बड़ा ऐतराज कीता गया किन्हां ने कीता
साध - संगत जी ईर्ष्या करन वालेयां ने क्यों ! क्योंकि
परमात्मा दा रूप हो गये सन, शब्द नूं प्राप्त कर चुके सन ।
कदी उन्हां दी जिन्दगी दा इतिहास पढ़या है तुसी ! फोटू लै के
घर रख दिती धूप बती धुखा दिती साडे सतिगुरु ने सानू वी लै
जाएगें ओ ते आपणा कम करके गये जिनी उन्हां नुं मणियाद
मिली आपा कम करके आपणी रुहां लै गये । जिन्हां ने उन्हां
दा हुक्म मन लेआ उन्हां दे नाल बैठे ने साडा की बणेगा सिर्फ
फोटो लाण (लगाण) नाल कुछ नहीं होयेगा । ऐ मिसाला क्यों
बणाईया जादिया ने ! उन्हां दी जिन्दगी दे विच जरा प्रवेश कर
के देखिये घर आदें सी कुण्डी चढ़ जांदी सी । कुण्डी उतरदी
सी ते आपणे कालेज दे विच जादें नजर आदें सी रस्ते दे विच

कोई मेहमान मिल गया । कहण लगे तुसी साडे घर ही आ करके ठहरना सी बड़े नजदीकी रिश्तेदार सी । कहण लगे सरदार बहादुर जी दो महीने हो गये ने मैं ते तुहाडे घर ही रह रेहा हां ऐ इतिहास किसी ने पढ़या है साडी जड़ दे विच कौण बैठा होईया है केड़ा रस्ता सानू दिखाया गया है उन्हां दी पन्नी नहीं सी ! बच्चे नहीं सी, समाज नहीं सी ! ऐथे आ के फरियादां कीतियां जादिया ने संसार दा शौक रख करके निरंतर उसदा चिंतन करके, निरंतर काम खातिर अपार जन्मां तक असी उस अकाल पुरख परमात्मा दा बदला नहीं चुका सकदे जितना उधार लै कर के खा चुके हां । उसदे बाद सानूं संशोधन दी जरुरत पै जांदी है उस अकाल पुरख परमात्मा दी आत्मिक प्रेरणा दे विच और आपणी जड़ दे विच संत की रस्ता दे गये ने सानू इसदी कोई खबर नहीं हैगी । निरंतर चिंतन उस अकाल पुरख परमात्मा दा, बंदगी, आपणा कार - व्यवहार वी करना है कितना जितना गुजारे मात्र दी प्रविष्टि है बस उस तों अगे दा उपदेश नहीं है । अगर तुसी इस इंतजार दे विच बैठे हो कि कोई अमीर आयेगा आपणी दौलत देगा और सानू हिस्पेदार बणां करके सचखण्ड लै जायेगा बैठे रहो अपार जन्म हो गये ने अज तक इस सृष्टि दा हिस्सा बणे होये हां ऐ दलील है । इक मिसाल है साडी गहारी दी असी आपणे घर नहीं जा सकदे

अगर चले गये होंदे ते ऐथे की कर रहे होंदें । जेडे सचखण्ड
तौं ऐ ताकत दे रहे ने सत्संग दे रहे ने असी उस महफिल दी
शोभा वदा रहे होंदें । असी ऐ सुणन वालेयां दे वी काबिल नहीं
हाँ । क्यों ! आत्मा तड़फदी है सख्त बचन इस्तेमाल कीते जादें
ने मिसाला दितिया जादिया ने किस दीआं ! तुहाडी और साडी
निजी जिन्दगी दीआं, किस कारण ऐ सुती होई आत्मा जगाण
वास्ते इक इन्सान सुता होवे पुं करन दी मिसाल जेडी
उदाहरण भुलया ते नहीं जदों सो जादा है ते किस तरह जगाया
जादा सी साध - संगत जी उसनूं ते असी जगा लेआ थोड़ी
मेहनत करके कटी असी आपणी आत्मा नूं जगा सके अज
तक अपार युग बीत चुके ने अपार समय बीत चुका है अज
तक साडी आत्मा सुती पई है और जिस वेले संत आ करके
होका दे करके जगादें ने उस समय ईर्ष्या और निन्दया दा
विषय निरंतर नफरत ! आत्मा दा कल्याण “खेत शरीर जो
बीजिये सो अंत खलोआ आई ।” कोई माई का लाल इस
मनुखे जन्म विच आ करके शरीर, जुबान और मानसिक रूप
विच जैसी क्रिया अपनायेगा उसदे प्रतिफल तौं नहीं बच
सकदा । ब्रह्म आपणी definition दे रेहा है जिस काल दी
असी निरंतर निन्दया करदे हाँ कि इन्सानी जीवन दे विच आई
जीवात्मा दा कमाया गया पाप है । जिस कारण ओ इस मुल्क

ਦੇ ਵਿਚ ਕੈਦ ਕਿਤੀ ਗਈ ਏ ਪਾਪ ਕਦੋਂ ਛਡਾਂਗੇ ਅਸੀਂ । ਗਦਦੀਆਂ ਦੇ
ਚਾਰ ਚਫੇਰੇ ਚਕਕਰ ਕਟਣ ਦੇ ਨਾਲ, ਝਾੜਨ ਦੇ ਨਾਲ ਕਿਸੀ ਦਾ
ਕਲਿਆਣ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਜਦਤਕਣ ਇਸ ਬਾਣੀ ਦੇ ਇਕ ਲਫਜ
ਦੀ ਗਲ ਛੋਡੀ, ਇਕ ਮਾਤਰਾ ਅਗੇ ਪਿਛੇ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ ! ਨ ਕੋਈ
ਹਸਤੀ, ਨ ਕੋਈ ਤਾਕਤ ਇਸ ਮੁਲਕ ਦੇ ਵਿਚ ਪੈਦਾ ਹੋਈ ਹੈ ਜੋ ਇਸਦੇ
ਵਿਚ ਫੇਰ ਬਦਲ ਕਰ ਦੇਗੀ ਜਿਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਸੂਰਜ ਇਕ ਦਿਨ
ਨਹੀਂ ਚਢੇਗਾ ਸੂਛਿ ਫਨਾ ਹੋ ਜਾਯੇਗੀ । ਤਥੀ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਅਕਾਲ
ਪੁਰਖ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਇਕ ਰੋਮ ਦੀ ਕਿਰਨ ਤੋਂ ਅਨਜ਼ੂਨ ਬ੍ਰਹਮਣਡ ਚਲ
ਰਹੇ ਹਨ ਉਸ ਦੀ ਤਾਕਤ ਨੂੰ ਕੋਈ ਵਧਤ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਔਰ
ਉਥਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦੇ ਵਿਚ ਸਂਸਾਰ ਦੀ ਗੁੰਝਾਇਸ਼ ! ਏ ਕਿਆ ਚੀਜ਼ ਹੈ
ਹੋਮੈ ਜੀਵ ਦਾ ਅਹੰਕਾਰ । ਉਸ ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਦਿਆ - ਮੇਹਰ ਦਾ ਨਾਜਾਇਜ
ਲਾਭ, ਰਹਮਤ ਦਾ ਭਣਡਾਰਾ, ਦਿਆ ਦਾ ਭਣਡਾਰਾ ਬਾਰਹ ਸੂਰਜ ਦੀ
ਤਾਕਤ ਏ ਆਤਮਾ ਦੇ ਕੌਲ ਮੌਜੂਦ ਹੈ ਸਚਵਾਈ ਏ ਹੈ ਬਿਨਾ ਕਿਸੀ
ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੇ, ਬਿਨਾ ਕਿਸੀ ਬਾਹਰੀ ਮਦਦ ਦੇ ਏ ਆਤਮਾ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਦੇ
ਆਖਿਰੀ ਪੱਤਾਵ ਤਕ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਔਰ ਗਈ ਹੈ । ਮੇਹਨਤ ਕਰਨ
ਵਾਲੇਂਾਂ ਨੇ ਕਿਤੀ ਹੈ ਔਰ ਓਥੇ ਤਕ ਗਿਆ ਨੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਤ੍ਰਿਲੋਕੀ ਨੂੰ
ਪਾਰ ਕਰ ਲੇਅਾ ਓ ਪ੍ਰਲਿਲ ਤੋਂ ਬਚ ਗਿਆ, ਜੂਨਾਂ ਤੋਂ ਬਚ ਗਿਆ, 84
ਲਖ ਜੂਨ ਖਤਮ ਹੋ ਗਈ । ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਦੀ ਜਿਤਨਿਆਂ ਜੂਨਾਂ ਨੇ ਬਡਿਆਂ
ਲਾਯਕ ਬੜੀ ਅਪਾਰ ਤਾਕਤ, ਬਹੁਤ ਅਪਾਰ ਤਾਕਤ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ
ਅਪਾਰ ਗਦਦੀਆਂ ਇਸ ਮੁਲਕ ਦੇ ਵਿਚ ਚਲਦਿਆਂ ਨੇ ਪਰ ਮੁਕਤਿ ਨਹੀਂ

है मुक्ति वास्ते ओ दया चाहिदी है जेड़ी संत इस मुल्क दे विच
लैकर के आदें ने जिसनूं कहा जांदा है अपार । अपार ताकत,
ओ दया ! दया दा दूसरा भाव है साध - संगत जी रुहानी भेद
है ओ है शब्द । दया दा भण्डार, रहमत दा भण्डार यानि शब्द
दा भण्डार । होर कोई वी भण्डार इस मुल्क दे विच इस आत्मा
दा कल्याण नहीं कर सकदा । असी केड़े भण्डारे दे विच फंसे
होये हाँ । केड़े भण्डारे मना रहे हाँ असी ओ ते आपणे भण्डार
दे विचों दया दी किरन, शब्द दी ताकत देण वास्ते इस मुल्क
दे विच आया है । कट्टी विचार कीती है आत्मा दा कल्याण
सिर्फ और सिर्फ ऐ शब्द दी किरन कर सकदी है । कोई माई
का लाल इस आत्मा नूं सचखण्ड नहीं लै जा सकदा कोई नहीं
लै जा सकदा सिर्फ इक दया । इक शब्द दी किरन । इसी
ताकत नूं लै करके इस मुल्क दे विच पूर्ण संत आदें ने और ऐ
दया दी किरण उस आत्मा नूं पारब्रह्म तों सचखण्ड अविनाशी
मुल्क दे विच प्रवेश करन दे काबिल बणादीं है सिर्फ प्रवेश
कराण ! उस तों अगे दा मजमून संत दा नहीं है । संत दी छ्यूटी
खत्म ओ भण्डार मनाण वास्ते । ऐ दया मेहर देण वास्ते इस
मुल्क दे विच संत आंदे ने सिर्फ और सिर्फ पूर्ण कल्याण इस
आत्मा दा पूर्ण मुक्ति लंगरा दे भण्डारे दे नाल हो सकदा है
शरीर दा कल्याण हो जाये कुछ घटेया लई । जिसने शब्द दी

ताकत किरन नूं प्राप्त कर लेआ उसदे अपार भण्डार दे विचों
इस दया दी लहर नूं प्राप्त कर लेआ उस नूं साध - संगत जी
किसी भोजन दी जरुरत नहीं है । किस अन्न जल दी जरुरत
नहीं है ओ आत्मा दा पूर्ण कल्याण हो जायेगा इसी मुल्क दे
विच ओ आत्मा सचखण्ड जायेगी अवश्य जायेगी क्योंकि
उसनूं इस काबिल बणा दिता गया है हुकम दे विच चली है ओ
आत्मा । अकाल पुरख परमात्मा दी आत्मिक प्रेरणा गुरु ग्रन्थ
साहिब दे ऊपर उसनूं पूरा उतारेया गया है उसदा प्रतिरूप
सचखण्ड प्रवेश करेगा होर कोई वी नहीं करेगा । ऐ है रहमत
दा भण्डारा । ओ आत्मा सचखण्ड दे विच अकाल पुरख
परमात्मा दी गोद दे विच इक दया होर प्राप्त करदी है जेझी
इसनूं पूर्ण बणादीं है उस तों पहले आत्मा अपूर्ण है बेशक बारह
सूरज तक पूर्ण है । कृष्ण जी ने आपणी बाणी दे विच बिल्कुल
स्पष्ट कीता है इस आत्मा नूं साधारण लफजां दे विच कोई
जमा - घटा कर नहीं सकदा । कोई मार नहीं सकदा, जला
नहीं सकदा बड़े श्लोक उन्हां ने उच्चारे ने आत्मा दे मुतलक
बहुत गहरा विशाल ज्ञान है इस आत्मा और करम दे मूतलक
। कहदें ने इंजेक्शन दे दिते, नाम दे दिता, अमृत दे दिता ।
झूठा है इस आत्मा नूं कोई इंजेक्शन नहीं दे सकदा । इस
मुल्क दे विच कोई नाम नहीं दे सकदा सिर्फ अकाल पुरख

परमात्मा इस सृष्टि दे विच ऐ शब्द सूक्ष्म तों सूक्ष्म मात्रा दे
विच प्लस या मार्ईनस होंदे ही सृष्टि खत्म है । केड़ा प्रचार
कीता जा रहा है केड़ी आत्मा दा कल्याण कीता जा रहा है
कितनेयां नूं सचखण्ड पहुचा दिता थोड़ा जेआ विचार करो
अकाल पुरख परमात्मा चार सूरज दी आपणी ताकत दे करके
इस आत्मा नूं इस लायक बणा देंदे हन कि ऐ आपणे मूल नूं
उस सिरजनात्मक शक्ति नूं अकाल पुरख परमात्मा कहा जादा
है परमात्मा है नहीं है उसनूं बनाण वाली वी कोई ताकत है
जिस तरह कहा जादा है शब्द गुरु जी दी रहमत दा भण्डारा ।
ऐ दया दिती गई किसी भण्डार दे विचों भण्डार दे रूप दे विच
उसी तरीके दे नाल अकाल पुरख परमात्मा उस सिरजनात्मक
शक्ति दा रूप लै करके मौजूद है ओ दया दा भण्डार लै करके
इस शब्द दा भण्डार लै करके इको ही ताकत है शब्द । उसी
नूं नाम कहा गया है और ऐही इंजेक्शन ऐही ताकत चार सूरजां
दी उस आत्मा नूं दे करके इस काबिल बणया जादा है ओ
आपणे मूल नूं जाणन दे, देखण दे काबिल बण सके लावायान
है किसी लफज दे नाल असी उसनूं व्यक्त नहीं कर सकदे सिर्फ
आत्मा उसनूं महसूस कर सकदी है गुरु नानक साहब क्या
कहदें ने ओथे जा करके “ऊंच अपार बैअंत सुआमी कौण
जाणे गुण तेरे ।” उसदे गुण नूं कोई माई का लाल व्यक्त कर

सकदा ही नहीं । चाह करके वी नहीं कर सकदे कोई कहे ना
मैं व्यक्त कर दागा कोई मिसाल ही नहीं है कोई लफज ही नहीं
है लाबायान औ सिरजनात्मक शक्ति असल परमात्मा है । गुरु
नानक साहब ने तिन सत्संग पहले परमात्मा दी definition
स्पष्ट कीती सी इक मनका लेआ सी जपुजी साहिब दा मूल -
मंत्र तों “अजूनी सैंभ” जुनिया तों रहित ते बहुत सारीयां
जीवात्मा ने सचखण्ड पहुंच गईया ने पारब्रह्म दे विच मौजूद
है ताकत वी है सब कुछ है “सैंभ” नहीं है आपणे आप तों नहीं
है आपणे आप तों अकाल पुरख परमात्मा नहीं है । कोई वी
रुह आपणे आप तों नहीं है । इसनूं बनाण वाली कोई ताकत
इसनूं गुरु नानक साहब सिरजनहार कहदें ने अलख, अगामी,
अनामी मुलकां दे विच । इन्हां मुल्कां दे विच अपार सम्पदा
अपार जिस तों कोई पार जा सकदा नहीं व्यान कर सकदा
नहीं ओ ताकत जिसनूं असल परमात्मा केहा जादा है आपणी
धुन आपणी मौज दे विच मस्त है । साथ - संगत जी कोई
नहीं जाणदा उस नूं किसे नूं उसदा शौक नहीं है पर आपणे हर
अंश दे नाल निरंतर जुड़ी होई है कहदें ने असी विछुड़े होये हाँ
। साथ - संगत जी असी उस तों अलग कदों होये सां असी ते
खाम - खा ही पिठ करी बैठे होये हाँ । शौक दी पिठ, काम दी
पिठ अज त्याग कर दो कोई बाहरों थोड़ी आणा है उसने ऐ

सृष्टि चला कौण रेहा है ! ऐ पुतला चला कौण रेहा है ! असीं
ते सिर्फ नचण वाले हाँ कोई नचाण वाला है जिस वेले चाहदा
है पुतला ढाह देंदा है जिस वेले चाहदा है खड़ा कर देंदा है ।
ओ सिरजनात्मक शक्ति निरंतर आपणे अंश दे नाल जुड़ी होई
है । ऐ ही ओ भेद है । ऐही ओ कारण है कि इस आत्मा दे विच
अज तक कोई माई का लाल, कोई ताकत फेर बदल, प्लस
माईनस नहीं कर सकदी । उसदा ऐही कारण है कि ऐ आपणे
मूल दे नाल निरंतर जुड़ी होई है और ऐही ओ तार है जेड़ी अपार
जन्मा दे सूक्ष्म तों सूक्ष्म हर क्रिया दा ओ ताकत हिसाब रख
के बैठी उसने नियम दे दिता है मौत दा । मौत दा नियम
प्रतिफल दा नियम । “नानक हुकमी लिखीऐ लेखु । जेहा
वेखहि तेहा वेखु ।” इन्सान दी जून दे विच आ करके शीशे दा
उदाहरण देंदे ने शीशे दे सामणे जैसी शक्ल लैकर के जायेगा
ना तेनूं वैसा reflection मिलेगा । कोई माई का लाल शीशा
तोड़ ते सकदा है reflection नूं बदल नहीं सकदा । ऐ मिसाल
दिती है गुरु नानक साहब ने ते इस करके साथ - संगत जी
सियाणत नूं त्याग करके जाण लो गद्दी, मत - धर्म जितने
मर्जी आडम्बर रच लो ऐ कोई असीं पहली वारी नहीं रचे । रच
कौण रेहा है ! होमै रच रही है । ओ 31 मनकेयां दी माला साडे
गले विच फंसी होई है ओ नचा रही है असीं नच रहे हाँ जेड़े

नचणां छोड़ देंदे ने आपणे घर चले जादें ने ते जेडे नचदे रहदें
ने साध - संगत जी ओ आपणे घर तौं भुले ही रहदें ने क्यों
नचणे तौं ही फुर्सत नहीं है बड़े स्वाद आंदे ने । इस मुल्क विच
बहुत स्वाद उसने दिते ने गुजारिमात्र दी प्रविष्टि गुरुनानक
साहब ने आपणी बाणी दे विच दिती है । “हउ” शब्द जेडा लेआ
है गुरु नानक साहब ने और मिसालां दितियां ने संतमत दीआं
। संत - सतिगुरु सरदार बहादुर जी, बाबा सावन सिंह जी कर्दी
इन्हां दी जड़ दे विच जा कर के देखणां जिस लगाए गये पेड़
दे विच अस्यी अज सा (सांस) लै रहे हां ना उतम आक्सीजन
जिस दे नाल साडा शरीर चल रेहा है रुहानियत दी । उसदे
पिछे जेडियां ताकतां कम कर रहियां ने कमाई वालियां उन्हां
ने केड़ा रस्ता दिता है जा करके आपणियां किताबां फलोर लो
। तारीफ है जिस साधारण रेट दे ऊपर ऐ लिटरेचर उपलब्ध
कराया गया है । है बहुत थोड़ा जेआ पर इसनूं बड़े सियाणत
दे नाल वटा - चढ़ा कर के साध - संगत जी कोई भिन्न भेद
नहीं, कोई निन्दया या वडिआई नहीं है जदों कमाई वालियां
ताकतां चलियां जादिया ने ना उस वेले सिर्फ झूठा, फोका
प्रचार रह जादा है बस अनुयायी बनाणे ने बस कुछ नहीं ।
किले बणे होये ने लंगरा दे सवेरे जादें ने शाम नूं आदें ने पता
नहीं की कर के आ रहे ने । आत्मा दा कल्याण हो गया जी

कदी जा कर के देखणा कदी इन्हां दे रंग ढंग नूं देखणा कोई
निन्दया वडिआई नहीं हो रही ऐ साडे मुँह ते चपेड़ा मारन वास्ते
क्यों ! आत्मा नूं जगाण वास्ते असी फिर वी पकके हां शरीर नूं
जगा लवागें आत्मा नूं नहीं जगावागें विआ - शादियां दे विच
16-16, 22-22 घटे जागदा है शरीर । भजन दे विच ढाई घटे
दे विच ही खराटे भरदा है । ढाई घटे पूर्ण सतिगुरु सचखण्ड
तों उतर करके आये ने अकाल पुरख दी ताकत नूं व्यक्त कर
रहे ने ऐथे बैठदे ही खराटे आणे शुरू हो जादें ने और जिस वेले
ओ जगादें ने उस वेले ईर्ष्या दा विषय शुरू हो जादां है कौण
करा रेहा है होमै करा रही है । बड़ी चंगी लगदी है गुरु नानक
साहब ने पिछले सत्संग दे विच बिल्कुल स्पष्ट कर दिता है ।
रेशम दा कोई शौकीन नहीं है । गले दे विच फंसी पई है रेशम
। खदड़ दे यार ने सारे और खदड़ मिलदे ही खुश हो गये ।
खदड़ पहनदे ही खुश हो गये रेशम दी कीमत कौण जाणदां है
! कोई विरला ही लाल दी कीमत कौण जाणेगा सुनार । कुम्हार
की करेगा गधे दे गले विच टंग देगा नाम लै आये अमृत लै
लाये गधे दे गले विच टंगण वास्ते । गधा ही बणया होईया है
पराया भोज ढोह रेहा है । कितनिया मिसाला गुरु साहब ने
दितिया ने कि सारी उम्र पराये गधे ही बणे रहोगे कदी आपणा
कम वी करोगे, कदों जागोगे, कदों ऐ सारी क्रिया छडोगे ! क्या

सरदार बहादुर जी ने लंगर दीआं ऊूटियां कोई नहीं दितियां सन । किस ने पूर्ण सतिगुरु दे दरबार दे विच आ करके उन्हां दे हुकम दी पालना नहीं सी किती रस्ता ओथे ही शुरू होंदा है सुषुम्भा नाड़ी दे विचों पर आपणे शौक दा प्रदर्शन तुहानूं करना पयेगा ईमानदारी दे नाल, सच्चाई दे नाल जुबान नूं पवित्र करना पयेगा । “जे रत लगै कपड़े जामा होई पलीत । जो रत पीवहि माणसा तिन कउ निरमलु चीतु । नानक नाउ खुदाई का दिलि हछे मुखि लेहु । अवरि दिवाजे दूनी के झूठे अमल करेहु ।” कहदें ने तेरे सारे दावे झूठे ने ऐ जो कुछ तूं झूठे दावे दिखाण वास्ते सत्संग दे विच आया बैठा है ना तेरा कल्याण नहीं होण लगा । जे रतु लगै कपड़े खून लग जाये ते जामा गन्दा हो जादां है साबुन नाल धोदें हां । कहदें ने इन्सान दा खून पीण लगा होआ है । दुनिया दे हक मार करके असी बैठे हां, खा करके बैठ जादें हां कदी विचार कीता है लोभ विच आ करके असी क्या कुछ नहीं करदे । किसी वी धधे नूं लै लो कदी विचार कीता है । इको ही computer लै करके विचार करदे हां कि साड़ी ढैलत वट जावै । लख रुपये दी investment कीती है उठदे तां वां computer तों जदों करोड़ रुपया बणां करके दिखा देंदा है किस तरह ! 90 किलो दी बोरी 85 दी, 15 किलो दा टीन 13 किलो दा, कपड़ा नापण

जाओ ते इक इंची घट निकलेगा । तोल लियाओ ते ओदे विच
टाका, पेट्रोल पवाओ ते ओदे विच टाका, कोई ऐसी जगह छड़ी
है जेदे विच असी टाका नहीं लादें । होर ते होर पूर्ण सतिगुरा
दे दरबार दे विच टाका । कहदें ने झूठ बोलो सारा दिन दुनिया
नूं कह दो कि सच बोलो । आत्मा दा कल्याण हो जायेगा ।
दुनिया नूं पढ़ान चले हांता जिन्दगी अगर असी आपणी आत्मा
नूं पढ़ा लेआ । आपणी आत्मा नूं जगा लेआ, समझ लो इन्सानी
जन्म दा पुन खट लेआ । असी दुनिया नूं पुन खटाण वास्ते
आये हां । दुनिया नूं पढ़ान दा हक सिर्फ और सिर्फ इक नूं है
जेडा सत्पुरुष नूं मिल गया और उस अकाल पुरख परमात्मा
दी आत्मिक प्रेरणा गुरु ग्रन्थ साहब दी हर मात्रा दे ऊपर जिसनूं
उस अकाल पुरख परमात्मा ने आपणा हथ दे करके पूरा उतार
दिता ओ प्रतिरूप है । कार्बन copy है उस हर मात्रा दी । पढ़ा
ओ वी नहीं सकदी पढ़ायेगा शब्द पर सिर्फ और सिर्फ उस घट
नूं अछित्यार दिता जादा है ते शौक पढ़ान दा नहीं रखो शौक
पढ़न दा रखो student बणो । ऐथे ते सारे हीं टीचर बैठे ने
किस नूं पढ़ाया जाये । चार दीवारी दे बाहर चक्कर लगादेया
कोई माई का लाल न पढ़ायेगा न अन्दर प्रवेश करन देगा ।
जेडा तख्ती कलम लै करके उस स्कूल दे विच प्रवेश लेगा ।
मास्टर दे हुक्म नूं मनेगा इक दिन अवश्य डिग्री लै करके

मास्टर दा रूप लैकर के बाहर जायेगा ओ जेडे मास्टर नूं बाहर
निकलदेया पत्थर मारन लगे ने, चाकू दिखाण लगे ने मास्टर
स्कूल ही छोड़ कर के चला जायेगा । पढ़ लो जेदे कोलों पढ़ना
है जा करके मास्टर मुर्गा बणादा है ते किस वास्ते करादा है
हथ खड़े करवादा है ते किस वास्ते करवादा है साडिया कमिया
दूर करन वास्ते । क्या आपणे भण्डारे भरन वास्ते और असी
उसदा क्या नतीजा, क्या अर्थ कड़दे हाँ । मास्टर दे विच कर्मी
है अकाल पुरख परमात्मा दी आत्मिक प्रेरणा दे विच कर्मी है
क्योंकि ओ आत्मा नूं ठोकर मारदी है जगादीं है ऐथे मुंडी
हिलादें जादें ने घर जादें ही कुम्बां तैयार हो जादा है नीतिया,
गुट बणने शुरू हो जादें ने । किस दा कल्याण हो रेहा है आत्मा
दा । साध - संगत जी शरीर दा वी नहीं होयेगा जिस जगह
बैठ के भजन करना चाहदे हो जिस जुबान दे नाल लये होये
नाम नूं जपणा चाहदें हो । “नानक नामु खुदाई का दिल हथे
मुख लैहु ।” जुबान पवित्र होणी चाहिदी है अंतकरण शुद्ध होणा
चाहिदा है परमात्मा नूं मिलण दा शौक होणा चाहिदा है जिस
जुबान दे नाल पवित्र लफज जपणा चाहदें हाँ असी पवित्र
कहदें हाँ ना लफज ने जाण लेआ उन्हाँ नूं जपण वास्ते ते
आत्मा चाहिदी है इस तों अगे ते उन्हाँ दी कोई हस्ती ही कोई
नहीं पर असी उन्हाँ नूं पवित्र कहदें हाँ असी वी पवित्र कह देंदे

हां । पवित्र ने क्यों पवित्र ने क्योंकि ओ इक ऐसे घट दे विचों
निकले ने जिस नूं असी संत - सतिगुरु कहदें हां जो परमात्मा
नूं मिल चुके ने उस दे हृदय दे विचों उठी होई तरंग सूक्ष्म तों
सूक्ष्म उस दे मुखार बिंद विचों निकल करके जदों साडे कनां
दे नाल लफज बण करके टकरादीं है साथ - संगत जी ओ
नाम है, ओ कीर्तन है, ओ अकथ - कथा है उसदे नाल जुड़
जाणा पवित्र जुबान दे नाल जिस जुबान दे नाल सारा दिन
झूठ बोलदे हां, जिस जुबान दे नाल पराई निन्दया करदे हां ।
जिस जुबान दे नाल पराया नूं नंगा करना देखणा चाहदें हां
सतिगुरु दे दरबार दे विच सानूं पर्दा चाहिदा है पर दूसरे नूं
असी नंगा देखणा चाहदें हां । दूसरेया नूं असी अन्दर जा करके
उन्हां दीआं चाला चलदे हां । परमार्थी जीवना दे रस्ते दे विच
रोड़े अटकादें हां । उन्हां दे हक नूं मार करके खा जादें हां
उसदे बाद वी उम्मीद लगा करके बैठा हां कि सचखण्ड जावांगे
इस इक ऊंगुल दे विचों निकल के दिखा दो इक रोम दे विचों
निकल करके दिखा दो इस शरीर दे विच अपार रोम ने कोई
गिनती नहीं कर सकदा । इन्हां दे विचों असी क्या निकलांगे
और इस कब्र दे विचों निकलण वाला शब्द नूं क्या मिलेगा ।
केड़े शब्द दा अहंकार लै करके बैठे हां असी पवित्र जुबान दे
नाल शौक रखदा होईया जप उसनूं किस तरीके दे नाल जप

अख बंद करके बगुले भक्ति दी लोड नहीं है । “कहा भयो दोऊ
लोचन मूँद कै वैठि रहिओ बक थिआन लगाइओ । न्हात
फिरिओ लोए सात समुंद्रन लोक गइओ परलोक गवाइओ ।
बासु कीओ बिखिआन सों बैठ के ऐसे ही ऐस सो बैस बिताइओ
। साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभू पाइओ
। जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ । सिरु थरि तली गली मोरी
आउ । इतु मारणु पैर धरीजै । सिरु दीजै काणि न कीजै ।”

इन्हां बचनां ते पूरे उतर करके फिर साडे कोल आणां रहमत
दा भण्डार उस्दे विचों रहमत दी, दया दी किरन प्राप्त करना
इस मुल्क दे विच सतिगुरु स्पष्ट कर रहे ने कोई वी रुह जेझी
परमात्मा नूं मिलण दा अधिकार प्राप्त कर चुकी है ओ ऐ सिर्फ
इन्सान दा जन्म और ऐ अधिकार असी सारे प्राप्त कर चुके
हां । जेझा शौक रखेगा उस परमात्मा दा उसनूं मिलण वास्ते
आपणी कुर्बानी देगा पल - पल त्याग करेगा इस रहमत दे
भण्डार विचों उस प्रकाश दी किरन नूं प्राप्त करन दे काबिल
अवश्य बणां दिता जायेगा । ओ सुहानी घड़ी उसदी जिन्दगी दे
विच अवश्य आयेगी । ऐ है रहमत दा भण्डारा । सचखण्ड तों
साडियां झोलियां विच शब्द गुरु जी ने तकसीम कर दिता है
अगर समाज दे उस मां दी गोद विच जाणा चाहदें हां साथ -
संगत जी सानूं उस परमात्मा दा शौक रखणां पयेगा व्यक्त
करना पयेगा असी तेरे तों बिछुड़े होये हां तेनूं मिलना चाहदें

हां ओ मां साडे तों दूर नहीं । कमी साडे विच है मां दा ध्यान
उसदा बच्चा किसी वी जगह होवे उस दा ख्याल निरंतर उसदे
विच होंदा है असल परमात्मा ओ सिरजनात्मक शक्ति उस दा
ख्याल उसदी ताकत निरंतर उस बच्चे दे विच इस आत्मा दे
विच इसी कारण असी अज तक इन्हाँ मुल्कां दे विच कायम
बैठे हां ते साथ - संगत जी साडे सारेयां दा फर्ज बणदा है कि
इस रहमत दे भण्डारे दे विचों उस प्रकाश दी किरन उस दया
दे भण्डार नूं प्राप्त करन दे काबिल बण जाईये । शब्द दी
व्याख्या, ओ रेशम गुरु नानक साहब जदों सचखण्ड तों हुक्म
करनगें फिर अगे असी उसनूं व्यक्त करागें । ते गुरु साहब जेझी
बाणी देंदे हन इस मुल्क दे विच सिर्फ और सिर्फ नुमाईदें
लफजां दे रूप दे विच प्रगट करदे हन लफज वी उसदे ने ऐ
शब्द वी उसदा है । मन, बुद्धि और इन्द्रियां तों परे दा शब्द
जिसदी आत्मा सुती होई है ओ उसनूं जाण नहीं सकदे । असी
शरीर दे विच बैठे हां शरीर इक साधन है ते साधनां दे विच ही
उस आत्मिक प्रेरणा नूं लफजां दे जरिये व्यक्त कीता जादा है
। उसी नूं नाम कह दिता जादा है और ऐ सारा नाम जपया
नहीं जादा न जप सकदा है इस करके संत सतिगुरु जेडे हन
उस परमात्मा दा इको ही लफज दे देंदे ने किसी भ्रम दे विच
न रहणा ऐ सच्चाई है इस तों अगे कोई अर्थ नहीं । असल

चीज है उस परमात्मा दा शौक उसदी बंदगी सब दे आचरण
नूं हासिल करना निरंतर इस जगत दा त्याग करना इक दम
कोई नहीं कर सकदा । हुण तुसी कहो जी साडे सतिगुरां ने
इक दम किसी ने नहीं कीता इतिहास पढ़ करके देख लो
आहिस्ते - 2 जदों तुसी सच्चाई दे ऊपर चलोगे अन्दरों दी
आपणे चित नूं साफ करोगें उसी वक्त इस रहमत दे भण्डार दे
विचों ओ दया दी किरन मिलदी है उस तों पहले किसी नूं नहीं
मिलदी जदों दया दी किरन मिल जादीं है उस तों बाद बाहर
दा मजमून खत्म हो जादां है प्रत्याहार योगियां दा चौथा मंत्र
यानि अंतरमुखी हो जाणां । उसी वक्त जीव अंतर मुखी होंदा
है उस तों पहले हो सकदा ही नहीं । ऐ 30 मनकेयां दी माला
31 वी शेरुवीं तोड़ कर के इक - 2 मनका कडणां पैंदा है और
इक - इक मनका ज्यों - 2 निकलदा जादां है । साथ - संगत
जी ऐ मां जेझी है ना आपणां कम करन लग जादी है ऐ दया
अन्दर कम करदी है । ऐ दया फिर सोझी वी देंदी है, रस्ता वी
देंदी है और उस आत्मा नूं जिथे अपार जन्मा दे ओटे पाप बीजे
होये ने इक पासों ओदी सफाई करवादी है दूसरा उसनूं शौक
प्रदर्शन करन दा समय मिलदा है इस मुल्क दे ओ इक चौथाई
हिस्सा ओ सिर्फ परमात्मा दे उते कुर्बान कर देंदी है ओ ज्यों -
2 कुर्बान करदी है ईमानदारी और सच्चाई दे नाल त्यों - 2

उसदे पाप घटाये जादें ने आत्मा नूं स्वच्छ कीता जादा है ते
साथ - संगत जी फिर ओ घड़ी वी आ जांदी है जदों इस कब्र
दे विचों ऐ आत्मा निकल जांदी है उस तों बाद शब्द है गुरु और
आत्मा उसदा चेला और घर उसदा सचखण्ड । उसदे बाद फिर
इस मुल्क दे विच नहीं आंदी भेजियां जादियां ने पर कदों जदों
उस अकाल पुरख दा हुकम होंदा है ते किस तरह भेजियां
जादियां ने ऐही शब्द, रहमत, दया दा भण्डार दे करके जिन्हां
नूं असी इस मुल्क दे विच परमात्मा कह कर के पूज देंदे हां
। ते साथ - संगत जी असल परमात्मा सिरजनात्मक शक्ति,
ओ आपणी धुन मौज विच मस्त है उसदा इस मुल्क क्या
अपार मुल्कां दे विच किसी नूं उस दी खबर नहीं असी अकाल
पुरख नूं परमात्मा कहदें हां उसदा कारण इको ही है क्योंकि
उसदी मर्जी बिना, उसदी मर्जी बिना, उसदी इक रोम दी किरन
दे बिना ऐ अपार ब्रह्मण्ड चल नहीं सकदे । ते सारी बाणी
जेड़ी है अकाल पुरुख दी आत्मिक प्रेरणा इस परमात्मा यानि
अकाल पुरुख दे इर्द- गिर्द धुमदी है पर जदों आत्मा ओथे पहुंच
जार्दीं है तदों ही उसनूं जा करके दसया जांदा है कि इसनूं वी
बनाण वाला कोई होर है ऐ संता दी दया मेहर है, वडिआई है
कि इस मुल्क दे विच ओ सानू सारे सच दस देंदे ने किस
कारण ! आत्मा जाग जाये । बस उन्हां दा केड़ा मकसद है !

ओ ऐसे आनंद दी अवस्था विच बैठे ने जेड़ा लावयान है ।

क्रमशः

FURTHER RECORDING NOT AVAILABLE

